>

Title: Need to increase the pension of old age people.

चौधरी लाल सिंह (उधमपुर): सभापति महोदय, मैं इस सदन में एक बहुत तकलीफ भरा मुद्दा उठाना चाहता हूं। हमारे बुजुर्ग, विडो या हैंडीकैप्ड लोगों को गवर्नमैंट ऑफ इंडिया और स्टेट गवर्नमैंट्स ने पैंशन देने का प्रोविजन रखा है। जो लोग नौकरी करते हैं, रिटायरमैंट के बाद रेशियो के अनुसार किसी को 10 हजार रुपये, किसी को 20 हजार रुपये और किसी को 40 हजार रुपये मिलते हैं। जो आदमी जवानी में मजदूरी करता रहा, गुरबत में जीता रहा और अपनी ताकत, सेहत से काम करता रहा, जब वह आदमी बुजुर्ग हो गया, तो उसके लिए आपने 200 रुपये पैंशन रखी है। मैं पूछना चाहता हूं कि इन 200 रुपयों से क्या उसकी खुराक चल सकती है? जब उसे दवाई की जरूरत हो, तो क्या वह उससे दवाई ले सकता है? इससे उसे पूरा खाना नहीं मिल सकता. कपड़े भी नहीं मिल सकते। मैं कहना चाहता हूं कि उस बुजुर्ग के साथ यह बहुत बड़ा जुल्म है।

सभापति महोदय, मैं भारत सरकार से मांग करना चाहता हूं कि बुजुर्गों के साथ एक अच्छा ट्रीटमैंट किया जाये और उनको मिनिमम पर-डे सौ रुपये मिलने चाहिए। यह पर मंथ 3000 रुपये बनता है। वह बुजुर्ग जवानी में अपने घर में बहुत शान से रहता था, लेकिन बुढ़ापे में उसका कोई सहारा नहीं रहा। उसके बच्चे भी उसे छोड़ देते हैं। सब माननीय सांसदों ने उस जगह पहुंचना है और कई पहुंचे हुए हैं। उनको कोई नहीं पूछता। इन लोगों की तो पैंशन लगनी है, लेकिन जिनकी पैंशन नहीं है, उनका क्या होगा? जिन लोगों को पैंशन मिलती है, चाहे वे अमीर फैमिली के ही क्यों न हों, उनके बच्चे भी उन्हें नहीं पूछते। इसलिए मेरी आपसे विनती है कि इन बुजुर्गों को जो पैंशन दी जाती है, वह कम से कम 3000 रुपये-पर-मंथ मिलनी चाहि। बुजुर्ग, विडो और हैंडीकैप्ड, इन तीनों का खास ध्यान रखने की जरूरत है।